10 जनवरी 2011
जिनवाणी 360

आचार्य का स्वरूप एवं महिमा

श्री प्रकाशचन्द जैन

प्रस्तुत आलेख में श्रमण के एक प्रकार 'आचार्य' के स्वरूप एवं महत्त्व का प्रतिपादन आगमिक आधारों के साथ किया गया है। आचार्य सम्प्रति तीर्थंकर के प्रतिनिधि श्रमण के रूप में धर्मतीर्थ के नायक होते हैं। **-सम्पादक**

नवकार मंत्र के तीसरे पद में जिन्हें नमस्कार किया गया है, वर्तमान में जो तीर्थंकर का प्रतिनिधित्व करते हुए धर्मसंघ का संचालन करते हैं तथा स्वयं पंचाचार का पालन करते हुए अपने शिष्य समुदाय से भी शुद्ध पालना करवाते हैं, ऐसे आचार्य भगवन्त 36 गुणों के धारक, आठ सम्पदा के स्वामी तथा संघ के नायक हैं।

आचार्य का स्वरूप-

1. आचर्य्यते असावाचार्य्यः सूत्रार्थावगमार्थं मुमुक्षुभिरासेव्यते इत्यर्थः (आवश्यकसूत्र की टीका) अर्थात् जो सूत्र और अर्थ के ज्ञान के लिए मुमुक्षुओं द्वारा सेवा किये जाते हैं, वे आचार्य कहलाते हैं।
2. आयरियाणं-आ -मर्यादया तद्विषयविनयरूपया चर्य्यन्ते-सेव्यन्ते जिनशासनार्थोपदेशकतया तदाकांक्षिभिरित्याचार्याः। उक्तं च-

   सुत्तत्थविऊ लक्खण-जुत्तो, गच्छस्स मेढि भूओ य।
   गणतत्तिविप्पमुक्को, अत्थं वाएइ आयरिओ।।

अर्थात् आकांक्षियों के द्वारा जो मर्यादापूर्वक जिनप्रवचन के अर्थ का उपदेश देने के कारण सेवन किये जाते हैं वे आचार्य कहे जाते हैं।

3. आयारो- ज्ञानाचारादि पंचधा, आ-मर्यादया वा आचारो-विहारः।
   आचारस्तत्र साध्यः स्वयं करणात्प्रभाषणात्प्रदर्शनाच्चेत्याचार्याः।
   आह च- पंचविहं आयारं, आयरमाणा तहा पयासंता।
   आयारं दंसंतां, आयरिया तेण वुच्चंति।।

   आवश्यकनिर्युक्ति 994

अर्थात् ज्ञानादि पांच प्रकार का आचार एवं मर्यादा पूर्वक विहार आचरणीय है। जो साधु स्वयं पंचाचार का पालन करते हैं, दूसरों से करवाते हैं और आचार को दिखाते हैं वे आचार्य कहलाते हैं।

4. अट्ठरससीलंगसहस्साहिट्ठियं तणू छत्तीसइविहयायारं जहट्ठियं मे गिलाए महत्ति साणुसमयं आयरंति त्ति वत्तयंति त्ति आयरिया। परमप्पणो य हियमायरंति आयरिया।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सव्वसत्तसीसगणाणं च हियमायरंति आयरिया। पाणपरिच्चाए वि उ पुढवीदीणं समारंभं नाऽऽयरंति, नारभंति, णाणुजाणंति आयरिया। सुहुमावरद्धे वि ण कस्सइ मणसाऽवि पावमायरंति त्ति वा आयरिया

-(महानिशीथ, अध्याय 3)

अर्थात् अठारह हजार शीलांग से युक्त, 36 गुणों से सहित जो सिद्धान्त के अनुसार वर्तन करते हैं। अपने व दूसरे के हित का आचरण करने वाले, सभी जीव व शिष्यों के हित का आचरण करने वाले, प्राणों का परित्याग करके भी जो पृथ्वीकाय आदि का समारंभ नहीं करते, नहीं कराते, न अनुमोदन करते। सूक्ष्म अपराध होने पर भी जो किसी का मन से भी बुरा नहीं चाहते, वे आचार्य कहलाते हैं।

5. आचार्यस्सूत्रार्थदाता, दिगाचार्य्यो वा।
आचार्यस्सूत्रार्थोभयवेत्ता लक्षणादियुक्तश्च।

आवश्यकसूत्र, अध्ययन 3, गाथा 95

अर्थात् आचार्य सूत्र एवं अर्थ के दाता अथवा आचार्य सूत्र, अर्थ व उभय के जानने वाले, लक्षणों से युक्त होते हैं।

सारांश- उन महापुरुषों को आचार्य कहते हैं जो स्वयं ज्ञानादि पंचाचार का पालन करते हैं, करवाते हैं। वे 36 गुणों के धारक, स्व-पर हितैषी तथा सूत्र व अर्थ के दाता होते हैं।

आचार्य की महिमा

1. चतुर्विध संघ में आचार्य की महिमा अपरम्पार है। वे तीर्थंकर का प्रतिनिधित्व करते हैं, उन्हें तीर्थंकर के समान माना जाता है-

तित्थयरसमोसूरि संमं जो जिणमयं पयासेइ।
आणं अइक्कमन्तो, सो कापुरिसो व सप्पुरिसो॥

महानिशीथ के पंचम अध्ययन में भावाचार्य को तीर्थंकर के समान कहा है- जे ते भावायरिया ते तित्थयरसमा चेव दट्ठव्वा तेसिं सन्तिअं आणं नाइक्कमेज्जति। उनकी आज्ञा का उल्लंघन करने वाला कापुरुष है, सत्पुरुष नहीं।

2. आयरियनमोक्कारो जीवं मोएइ भवसहस्सातो।
भावेण कीरमाणो, होउ पुणो बोहिलाभाए॥
आयरियनमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं तइयं हवइ मंगलं॥

-अभिधान राजेन्द्र कोष

भावपूर्वक आचार्य को किया गया नमस्कार हजारों भवों से छुटकारा दिलाता है तथा बोधि को देता है।

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सभी मंगलों में तीसरा मंगल है।

3. आचार्य के बिना कोई संघ नहीं रह सकता। यदि आचार्य कालधर्म को प्राप्त हो जाये तो तत्काल नये आचार्य का मनोनयन अनिवार्य है, अन्यथा साधु-साध्वियों के लिए प्रायश्चित्त का विधान है।

4. आचार्य संघ के लिए मेढीभूत आदि होते हैं-

मेढी आलंवणं खंभं दिट्ठि जाणसुउत्तमं।
सूरि जं होइ गच्छस्स..... ॥

अभिधान राजेन्द्र कोष

आचार्य संघ के लिए मेढीभूत- गाय को बांधने के खंभे के समान गच्छ को मर्यादा से प्रवृत्ति कराते हैं। आलम्बन रूप हैं- भव गर्त में गिरते हुए संघ को धारण करने से खंभे के समान हैं- जैसे खम्भा भवन का आधार होता है उसी प्रकार आचार्य भी संघ के आधार होते हैं। नेत्र के समान- जैसे नेत्र वस्तुओं को दिखाते हैं वैसे ही आचार्य संघ के भावी शुभाशुभ के प्रदर्शक होते हैं। यानपात्र के समान- जैसे यान तीर के पार पहुँचा देता है वैसे ही आचार्य भी गच्छ को तीर पार करवा देते हैं।

5. आचार्य पद का सम्यक्तया निर्वहन करने वाले महापुरुष या तो उसी भव में मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं अथवा तीसरे भव का तो उल्लंघन नहीं करते। भगवतीसूत्र में उल्लिखित आचार्य की महिमा का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है।

-व्यंकटेश अपार्टमेन्ट, 12- अजय कॉलोनी,
जे.डी.सी.सी. बैंक के सामने, रिंग रोड़, जलगाँव-425001 (महा.)

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org